याद आ गया अपना बचपन

संतोष कुमार सिंह

याद आ गया अपना बचपन,
जाते खेतों पर।
कौन खेत में कौन फसल है?
लेते खोज खबर।।

चादर हरी ओढ़ कर मिलती,
मक्का की भुटिया।
फसल रखाने सोते दादा,
ले करके लठिया।।

खड़े खेत में तन कर गन्ने,
भाते थे अक्सर।
याद आ गया अपना बचपन..।।

बाल-बाजरा की थीं ऊपर,
नीचे सेंद मिलें।
पकी सेंद होती थी मीठी,
खाकर हृदय खिलें।।

श्वेत कपास दिखे खेतों में,
तारे ज्यों अंबर।
याद आ गया अपना बचपन..।।

निकुती-लड्डू, सत्तू, हिस्से,
भुना चबैना खा।
सीरा-फुलका, लपसी-हलुआ,
और बताशे पा।।

चना-मटर के होरा भूनें,
मुस्काते खाकर।
याद आ गया अपना बचपन..।।

कोल्हू चलता गुड़ भी बनता,
राब और शक्कर।
घर बनती रसखीर हमारे,
रस पीते छककर।।

कच्ची छतें टपकतीं लगता,
जब वर्षा का झर।
याद आ गया अपना बचपन..।।

आम चूसते, जामुन काली,
खिन्नी भी खाते।
घुसते नहीं कभी बागों में,
माली को पाते।।

स्वयं तोड़ कर खूब फालसे,
लाते जेबें भर।
याद आ गया अपना बचपन..।।

शीतल मंद हवा बहती थी,
शुद्ध सदा होती।
किंतु शहर में घोर प्रदूषण,
सांस-सांस रोती।।

हैं सुविधाएँ किंतु हवा में,
मिलता भरा जहर।
याद आ गया अपना बचपन..।।

मथुरा, उत्तर प्रदेश

ISSN:2583-8849